आलस्य और अलबेलापन - 30

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ पुरुषार्थ में चलते-चलते पुरुषार्थ से जो प्राप्ति होती उसका अनुभव करते करते बहुत प्राप्ति के नशे और खुशी में आ जाते। बस हमने पा लिया, अनुभव कर लिया। महावीर, महारथी बन गये, ज्ञानी बन गये, योगी भी बन गये। सेवाधारी भी बन गये। यह प्राप्ति बहुत अच्छी है लेकिन इस प्राप्ति के नशे में अलबेलापन भी आ जाता है। इसका कारण? ज्ञानी बने, योगी बने, सेवाधारी बने लेकिन हर कदम में उड़ती कला का अनुभव करते हो?

➳ _ ➳ **जब तक जीना है तब तक हर कदम में उड़ती कला में उड़ना है।** इस लक्ष्य से जो आज करते उसमें और नवीनता आई वा जहाँ तक पहुँचे। वही सीमा सम्पूर्णता की सीमा समझ लिया? **पुरुषार्थ में प्राप्ति का नशा और खुशी भी आवश्यक है लेकिन हर कदम में उन्नति वा उड़ती कला का अनुभव भी आवश्यक है। अगर यह बैलेन्स नहीं रहता तो अबलेलापन, ब्लैसिंग प्राप्त करा नहीं सकता।**

➳ _ ➳ **इसलिए पुरुषार्थी जीवन में जितना पाया उसका नशा भी हो और हर कदम में उन्नति का अनुभव भी हो। इसको कहा जाता है - 'बैलेन्स'। यह बैलेन्स सदा रहे।** ऐसे नहीं समझना हम तो सब जान गये। अनुभवी बन गये। बहुत अच्छी रीति चल रहे हैं। अच्छे बने हो यह तो बहुत अच्छा है लेकिन और आगे उन्नति को पाना है। **ऐसे विशेष कर्म कर सर्व आत्माओं के आगे निमित एक्जैम्पुल बनना है। यह नहीं भूलना।** समझा किन-किन बातों में बैलेन्स रखना है? **इस बैलेन्स द्वारा स्वत: ही ब्लैसिंग मिलती रहती है।** तो समझा नम्बर क्यों बनते हैं? कोई किस बात के बैलेन्स में कोई किस बात के बैलेन्स में अलबेलेपन जाते हैं।

(07.05.1984)

➢➢ बैलेंस

➳_ ➳ इस जीवन में चलने के लिये हमे हर बात में बेलेंस रख के चलना बहुत जरुरी है

→ खाने का भी बैलेंस रखना है

→ **याद और सेवा का बेलेंस**

■ **बाबा को गहराई से याद करके कोई भी सेवा करनी है,** तो वह सेवा अनुभव के रुप में याद भी रहेगी

▶ **और वह अनुभव के आधार पर ही हम आगे बढ़ते रहेंगे**

➳_ ➳ **मन्सा शक्ति के द्वारा आत्माओ को मन की शांति का अनुभव करा सकते है**

➢➢ **वैराग्य**

➳_ ➳ **बेहद के वैरागी अर्थात <u>मनसा वाचा कर्मणा में बेहद के वैरागी</u>**

→ हर **संकल्प** बेहद की सेवा में **समर्पित** हो

→ हर **बोल** में **निस्वार्थ भावना** हो

- कोई भी बात का स्वार्थ छिपा हुआ न हो

→ **हर कर्म में करनकरावनहार करा रहा है, हम निमित है**

- **तो जिम्मेवार बाबा बन जाता है**

  - अगर यह स्मृति नही रहती है, तो कुछ गलत कर्म हो जाते है, तो दुखी हो जाते है

➳_ ➳ बाबा के **<u>प्यार में वैराग्य</u>** आएगा तो हम सब कुछ आसानी से **छोड़** सकते है, **छुड़ाने की जरुरत नही पड़ेगी**

→ हमारा बाबा से प्यार होगा तो हम स्वतः ही बेहद के वैरागी बन जायेंगे

➳_ ➳ बेहद के वैरागी माना **<u>संकल्प में भी बाबा के अलावा और किसी का भी विचार न आये</u>**

→ बस एक बाबा ही मेरा सब कुछ हो

- **उससे ही मेरे सर्व संबंध**

➳_ ➳ बेहद के वैरागी अर्थात **<u>शरीर में रहते भी बेगर</u>**

→ सबसे बड़ी परिभाषा तो यही है की इस शरीर रुपी घर में रहते भी बेगर

- **देह भी बाप की है नाकि मेरी**

  - इतना देह के भान से भी परे रहना है

➳_ ➳ बेहद क वैरागी अर्थात **<u>अपनापन मिट जाय और बाबापन आ जाय</u>**

→ **हर संकल्प, हर बोल में बाबा ही समाया हुआ हो**

➢➢ साधन

➳_ ➳ साधनों को यूज़ करना है

→ पर उसका **आधार** नही लेना है

- उसके **अधीन** नही होना है
- आधार के अधीन होना माना वशीभूत होना

  - **वशीभूत अर्थात भूत आत्मा**
  - वशीभूत आत्मा **परवश** होती है इसलिए **परेशान** करती है